डालफिन

मीठी भाषा

MEETHEE BHASHA

TWO Way Reader

DOLPHIN® Primary Books

5

With meanings in English

4 हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय प्रतीक किसी भी देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता के विषय में बताते हैं। 15 अगस्त 1947 को हमारे देश को स्वतंत्रता मिली थी। इससे पहले हमारा देश अंग्रेज़ों का गुलाम था। उस समय हमारा कोई भी राष्ट्रीय प्रतीक नहीं था। राष्ट्रीय प्रतीक किसी देश की पहचान होते हैं। हमारे राष्ट्रीय प्रतीक इस प्रकार हैं-

राष्ट्रीय चिह्न

हमारा राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तंभ है। हमारे राष्ट्रीय चिह्न में चार सिंह हैं। इनके मुँह चारों दिशाओं की ओर हैं। हमें केवल तीन सिंह दिखाई देते हैं। ये सिंह एक समतल आधार पर खड़े हैं। इसी आधार पर एक हाथी, एक घोड़ा, एक बैल और सिंह अंकित हैं। सामने की ओर घोड़े और बैल के मध्य एक चक्र है। इस चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा है। जिसका अर्थ है सदा सत्य की ही जीत होती है। इस राष्ट्रीय चिह्न को सारे सरकारी कागज़ों और नोटों पर देखा जा सकता है।

राष्ट्रीय ध्वज

हमारे राष्ट्रीय ध्वज का नाम तिरंगा है। यह तीन रंगों से मिलकर बना है। इसमें सबसे ऊपर केसरिया रंग, मध्य में सफ़ेद और सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी होती है।

मध्य में सफ़ेद पट्टी पर नीले रंग का चक्र बना होता है। इस चक्र में चौबीस तीलियाँ होती हैं। राष्ट्रीय ध्वज का केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है, सफ़ेद रंग शांति का और हरा रंग समृद्धि का प्रतीक है। हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए।

9 चाँद का कुरता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
सिलवा दो माँ मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुरकर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह, मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो, कुरता ही कोई भाड़े का।

बच्चे की सुन बात कहा माता ने, "अरे सलोने,
कुशल करे भगवान, लगे ना तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं, मैं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।

घटता बढ़ता रोज किसी दिन, ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही यह बता, नाप तेरी किस रोज लिवाएँ।
सी दे एक झिंगोला, जो हर रोज बदन में आए।"

– रामधारी सिंह 'दिनकर'

12 दानवीर कर्ण

युगों पहले की बात है। कौरवों और पांडवों के बीच घमासान युद्ध चल रहा था। अचानक कर्ण के रथ पहिया जमीन में धँस गया। कर्ण रथ से उतरकर नीचे आए और जमीन से पहिया निकालने का प्रयास करने लगे।

भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा पाकर अर्जुन ने कर्ण को एक ऐसा बाण मारा कि वे घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। अपने गुरु परशुराम द्वारा दिए गए श्राप के कारण महारथी कर्ण अपनी धनुविदया भूल गए और अर्जुन के बाणों का सामना नहीं कर सके।

अत्यधिक घायल होने के कारण वे मरणासन्न अवस्था में युद्ध-भूमि में पड़े हुए थे। महावीर कर्ण की दानशीलता दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। उनके द्वार पर आया भिक्षुक कभी खाली हाथ वापस नहीं लौटता था। श्रीकृष्ण ने कर्ण की दानशीलता

16 शरीर के अंग

सिर Head
चेहरा Face

भौं Eyebrow
आँख Eye

कान Ear

नाक Nose

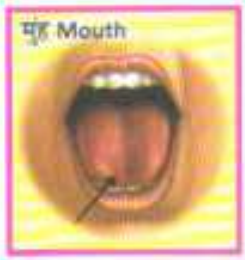
मुंह Mouth

होंट Lips

सिर Head
बाल Hair
माथा Forehead
कान Ear
गाल Cheek
ठोड़ी Chin
गरदन Neck
कंधा Shoulder
छाती Chest
बाँह Arm
कोहनी Elbow
पेट Belly
डोंढ़ी Navel
हाथ Hand
उंगलियाँ Fingers
जांघ Thigh
घुटना Knee
टांग Leg
पैर की उंगुलियां Toes

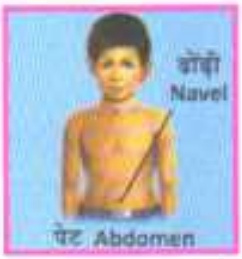
डोंढ़ी Navel
पेट Abdomen

नाखून Nails
उंगलियाँ Fingers
अंगूठा Thumb
कलाई Wrist

हथेली Palm

बाँह Arm
कोहनी Elbow

टांग Leg
पैर Leg

दांत Teeth

छाती Chest

घुटना Knee

डालफिन

Get the complete series..

Designed, Printed & Published By :
Sekar Publishers
An ISO 9001:2000 Certified Company
3/1078/2, Meenampatti, Sattur Road,
Sivakasi - 626189 Tamilnadu - India.
Tel : +914562 274132
Email: sekarpublishers@gmail.com
Log on to: www.dolphinprimarybooks.com

ISBN 978-93-83753-36-3